आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:12-09-14

ज्ञान सागर बाप ने आज सारी मुरली में हम बच्चों को भक्ति और ज्ञान का अंतर समझाते हुए कहा, मीठे बच्चे - यह ज्ञान मार्ग है, ज्ञान सागर एक ही बाप होता है, ज्ञान सिखाने के लिए बाप को आना पड़ता है क्योंकि वही ज्ञान का सागर है. वह खुद आकर अपना परिचय देते हैं कि मैं सर्व आत्माओं का बाप हूँ.

बाबा ने आज सारी मुरली में हम बच्चों का भक्ति और ज्ञान का अंतर, अलग-अलग उदाहरणों देकर के समझाया है जिसे की हम समझकर औरो को भी समझा सके और दूसरों का भी कल्याण करें.

- भक्ति में गुरु लोगों की दृष्टि रहती है कि यह हमारे शिष्य हैं अथवा फालोअर्स वा जिज्ञासु हैं, तो हल्की दृष्टि हो गई ना. शिष्यों भी उनको अपना गुरु समझते हैं, दृष्टि ही वही रहती है कि यह हमारा गुरु है. गुरु के लिए रिगार्ड रखते हैं. तो गुरु-शिष्य दोनों देखते है शरीरों को और रहते भी देह-अभिमानी होकर. यहाँ ज्ञान में तो बहुत फर्क हैं, यहाँ बाप ही बच्चों का रिगार्ड रखते हैं. जानते है इन बच्चों को पढ़ाना है सतयुग के लायक बनाना हैं. बाप तो सदा देही-अभिमानी है और बच्चों को भी देही-अभिमानी बनाते हैं.

- भक्ति में उन गुरुओं की दिल में बच्चे का लॅव नहीं होगा. यहाँ ज्ञान में बाप का तो बच्चों से बहुत लॅव रहता है और बच्चों का भी बाप पर लॅव रहता है.

- भक्ति में आधालक्प शास्त्र आदि सुनते, कर्मकाण्ड करते, गायत्री, संध्या आदि करते भी परमात्मा को नहीं जानते थे. इसलिए परमात्मा के बारे में कहते थे वह तो सर्वव्यापी है. यहाँ ज्ञान में तो परमात्मा ही स्वयं आकर हमें राजयोग सिखाते हैं, जिससे हम मनुष्य से देवता अर्थात राजा बन सकते है. परमात्मा हमें सृष्टि चक्र का सारा राज समझाते हैं, जिससे हम चक्रवर्ती राजा बन सकते है.

- भक्ति में सबकुछ करते भी हमारी आत्मा तो पतित ही बनती जाती हैं. यहाँ पतित-पावन, परमात्मा, बाप स्वयं हम आत्माओं को पतित से पावन बनने की युक्ति बताते है. वह सर्वशक्तिमान बाप खुद कहते है - मुझे याद करने से ही तुम्हारे पाप भस्म होंगे क्योंकि योग अग्नि है ना.

- भक्ति में हम श्रीकृष्ण को ही भगवान समझते है. यहाँ ज्ञान में स्वयं परमात्मा शिवबाबा ने समझाया की श्रीकृष्ण तो महात्मा है क्योंकि श्रीकृष्ण है संपूर्ण निर्विकारी. श्रीकृष्ण को भगवान नहीं, देवता कहा जाता हैं.

- भक्ति में संसार को त्याग, जंगलों में चले जाने को ही सच्चा सन्यास समझते थे. यहाँ ज्ञान में बाबा ने हमें समझाया की वह तो हद का सन्यास है, उसे आत्मा को मुक्ति-जिवनमुक्ति प्राप्त नहीं होती. अभी हम ब्राह्मण गृहस्थ आश्रम में रहते संपूर्ण पवित्र रहते है और सारी पुरानी दुनिया को मन-बुद्धि से भूलने का पुरुषार्थ करते है उसे ही बेहद का सन्यास कहा जाता है, जिसे आत्मा को सच्ची मुक्ति-जिवनमुक्ति प्राप्त होती हैं.

ॐ शांति.